Toppersnotes
Unleash the topper in you

SUPER TET

UTTAR PRADESH BASIC EDUCATION BOARD

भाग – 6

शिक्षण कौशल, सूचना तकनीकी, जीवन कौशल / प्रबंधन एवं अभिवृति

SIERRA INNOVATIONS

विषय सूची

1. शिक्षा मनोविज्ञान 1

2. अधिगम 6

3. बाल विकास 18

4. व्यक्तित्व 27

5. बुद्धि 36

6. अभिप्रेरणा 43

7. व्यक्तिगत विभिन्नता 47

8. बुद्धि के सिद्धांत व बाल विकास 53

9. समाजीकरण 59

10. Psychology की book व उनके लेखक 61

11. मनोविज्ञान के सिद्धांत व प्रतिपादक 64

12. शिक्षण विधियाँ 68

13. जीवन कौशल 71

14. व्यावसायिक आचरण व नीति 73

15. शिक्षण एक व्यवसाय 79

16. अभिप्रेरणा 95

17. शिक्षा के लिए संवैधानिक प्रबंध 119

18. मानव मूल्य 127

19. कम्प्यूटर एक सामान्य परिचय 133

20. सूचना तकनीकी 194

21. मुक्त शैक्षिक संसाधन 211

Toppersnotes
Unleash the topper in you

Unit-1

शिक्षा मनोविज्ञान

Psychology शब्द की उत्पत्ति (गैरेट के अनुसार) ग्रीक/लैटिन भाषा के दो शब्द Psyche + Logos से हुई।

अर्थ

Psyche - आत्मा
Logos - अध्ययन करना

16 वीं शताब्दी में सर्वप्रथम प्लेटो, अरस्तू तथा डेकार्ट ने मनोविज्ञान को आत्मा का विज्ञान माना।

17 वीं शताब्दी में इटली के मनोवैज्ञानिक पॉम्पोनॉजी व सहयोगी थासडीड ने मनोविज्ञान को मन या मस्तिष्क का विज्ञान माना।

19 वीं शताब्दी में विलियम वुण्ट, विलियम जेम्स, जेम्सली टिचनर, वाइल्स आदि के द्वारा मनोविज्ञान को चेतना का विज्ञान माना।

20 वीं शताब्दी में मनोवैज्ञानिक वाटसन, वुडवर्थ, स्किनर मैकडूगल व थार्नडाइक आदि ने मनोविज्ञान को व्यवहार का विज्ञान माना।

Note - विलियम वुण्ड ने जर्मनी के लिपजिंग शहर में 1879 को प्रथम मनोवैज्ञानिक प्रयोगशाला, भारत में 1915 कलकत्ता में सेन गुप्त द्वारा प्रथम मनोवैज्ञानिक प्रयोगशाला स्थापित की इसलिए विलियम वुण्ट को 'प्रयोगात्मक मनोविज्ञान' का जनक माना जाता है।

Toppersnotes
Unleash the topper in you

परिभाषाएँ

1) J. S. रॉस के अनुसार, "पहले मनोविज्ञान का अर्थ आत्मा से लगाया जाता था परन्तु यह परिभाषा अस्पष्ट है क्योंकि हम इस प्रश्न का संतोषजनक उत्तर नहीं दे सकते कि 'आत्मा क्या है?' अतः 16 वीं शताब्दी में मनोविज्ञान का अर्थ अस्वीकार कर दिया।

2) पिल्सबरी के अनुसार, "मनोविज्ञान की सबसे संतोषजनक परिभाषा मानव व्यवहार के विज्ञान के रूप में की जा सकती है।
"Psychology may most satisfactorily defined as the science of human behavior."

3) वुडवर्थ के अनुसार —
1) मनोविज्ञान व्यक्ति के पर्यावरण के सम्बन्ध में व्यक्ति की क्रियाओं का विज्ञान है।
Psychology is the science of the activities of the individual in relation to environment.

2) "मनोविज्ञान के सर्वप्रथम अपनी आत्मा का त्याग किया। फिर मन व मस्तिष्क का त्याग किया फिर उसने अपनी चेतना का त्याग किया और वर्तमान में मनोविज्ञान व्यवहार के विधि स्वरूप को स्वीकार करता है।"

4) मैक्डूगल के अनुसार — मनोविज्ञान व्यवहार व आचरण का विज्ञान है।

Psychology is a positive science of the conduct or behavior.

Toppersnotes
Unleash the topper in you

5) <u>वाटसन का कथन</u> —1) " तुम मुझे एक बालक दो मैं उसे वो बना सकता हूँ जो मैं बनाना चाहता हूँ।"

2) मनोविज्ञान व्यवहार का शुद्ध, निश्चित, सकारात्मक, धनात्मक विज्ञान है।

6) <u>स्किनर के अनुसार</u> —
1) मनोविज्ञान व्यवहार व अनुभव का विज्ञान है।
2) <u>शिक्षा मनोविज्ञान</u> अध्यापकों की तैयारी की आधारशिला है।

7) <u>क्रो एवं क्रो के अनुसार</u> — मनोविज्ञान मानव व्यवहार और मानव सम्बन्धों का अध्ययन है।

8) <u>N.L. मन के अनुसार</u> —
1) मनोविज्ञान मनुष्य के अनुभव के आधार पर व्याख्या किए गए आन्तरिक अनुभव तथा बाह्य व्यवहार का विधायक विज्ञान है।
Psychology is a positive science of experience and behavior interpreted in terms of experience.

2) आधुनिक मनोविज्ञान का सम्बन्ध व्यवहार की वैज्ञानिक खोजें है

9) <u>R.H. थाउलैस के अनुसार</u> — मनोविज्ञान मानव अनुभव एवं व्यवहार का यथार्थ विज्ञान है।
Psychology is the positive science of human experience and behavior.

10) <u>गार्डनर मर्फी के अनुसार</u> — मनोविज्ञान वह विज्ञान है जिसमें जीवित प्राणियों की उन क्रियाओं का अध्ययन किया जाता है जिनको हम वातावरण के प्रति तैयार करते हैं।

Toppersnotes
Unleash the topper in you

11) बोरिंग के शब्दों में — ~~मानव~~ मनोविज्ञान मानव प्रकृति का अध्ययन है।

12) वारेन के अनुसार — मनोविज्ञान वह विज्ञान है जो एक प्राणी और परिवेश में सरोकार रखता।

Psychology is the science which deals with the mutual interrelation between an organism and environment.

Points to Remember of Educational psychology

★ मनोविज्ञान शब्द का प्रयोग सर्वप्रथम रुडोल्फ गोयकल को जाता है।
★ प्रथम शैक्षिक मनोवैज्ञानिक थार्नडाइक को माना जाता है।
★ शिक्षा में मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण का सूत्रपात रुसो ने किया। उन्होंने अपनी पुस्तक E-mail में लिखा है — शिक्षा संस्कृत के शिक्ष् धातु से बना।

Definitions :-

1) स्किनर के अनुसार — 'मनोविज्ञान शिक्षा का आधारभूत विज्ञान है।'

2) क्रो एण्ड क्रो के अनुसार — शिक्षा मनोविज्ञान जन्म से वृद्धावस्था तक एक व्यक्ति के सीखने के अनुभवों का वर्णन और व्याख्या करता है।

3) फ्रोबेल के अनुसार — शिक्षा एक प्रक्रिया है जिसके द्वारा एक बालक अपनी जन्मजात शक्तियों का विकास करता है।

4) रुसो के अनुसार — बालक एक पुस्तक के समान है जिसका अध्ययन प्रत्येक अध्यापक को करना चाहिए।

Toppersnotes
Unleash the topper in you

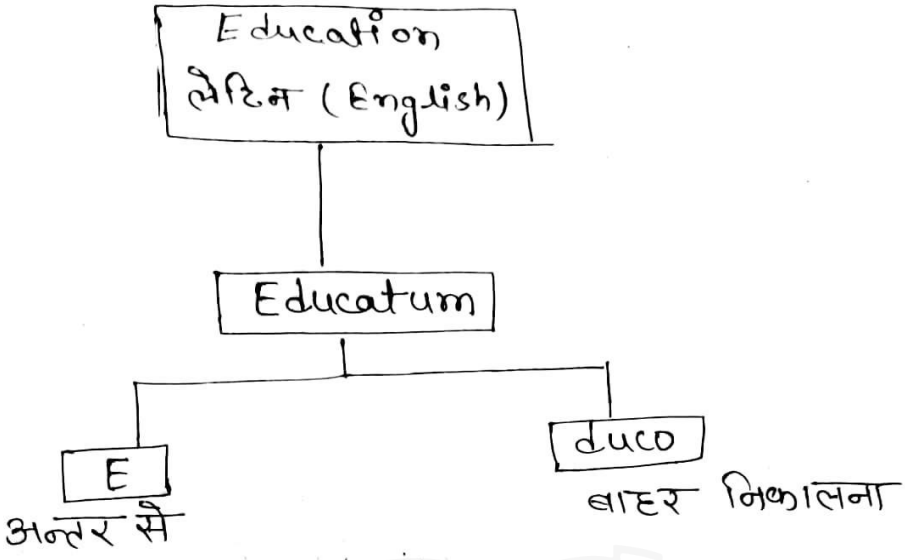

* Education शब्द की उत्पत्ति लैटिन भाषा के दो अन्य शब्दों से भी मानी जाती है।

1) Educare (अर्थ – पालन पोषण करना)

2) Educere (अर्थ - आगे बढ़ाना)

शिक्षा मनोविज्ञान की प्रकृति –

1) शिक्षा मनोविज्ञान की प्रकृति वैज्ञानिक है।

2) इसमें नियम व सिद्धान्त का प्रयोग किया जाता है। जो कि सार्वभौमिक होते हैं।

3) शिक्षा मनोविज्ञान व्यक्ति के व्यवहार का वैज्ञानिक अध्ययन करता है।

4) शिक्षा मनोविज्ञान एक सकारात्मक (विधायक) विज्ञान है।

जीवन कौशल/प्रबन्धन एवं अभिवृत्ति

जीवन कौशल/प्रबन्धन एवं अभिवृत्ति

1.जीवन कौशल

अल्बेयर कामू ने भी अपनी एक पुस्तक में लिखा है कि मनुष्य जीवन की एकमात्र महत्वपूर्ण समस्या दृश्य जीवन की अदृश्य जडों को न समझ पाना है। यही वजह है कि अब मनुष्य को जीवन में कोई प्रयोजन नजर नहीं आता है। मनुष्य का गुप्त मन प्रचण्ड शक्ति वाला डाइनामाइट है, यही मनुष्य के समग्र जीवन को संचालित करने से ही ज्ञानेन्द्रियों तथा कर्मेन्द्रियों से विचारों का सृजन होता है। विचार से दृष्टिकोण तथा इनके आधार पर हम क्रियाएँ करते हैं। क्रियाओं से स्वभावों व फिर आदतों का निर्माण होता है जिसका संचय ही जीवन है। अच्छे या बुरे विचार ही मानव के गुप्त मन में प्रविष्ट होकर मनुष्य को उन्नति व अवनति की तरफ ले जाते है ।

वर्तमान में शिक्षा बौद्धिक विकास पर ही केन्द्रित है जबकि शिक्षा का उद्देश्य व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास है। इस हेतु ही जीवन कौशल शिक्षा (Life skill education) को आवश्यक समझा गया है। जीवन कौशल को ''दैनिक जीवन कौशल या 'सरवाइवल कौशल' (Survival skills) के नाम से भी पुकारते है जिसमें वे सभी तथ्य सम्मिलित है जिनका सामान्य तौर पर दिन-प्रतिदिन के जीवन में प्रयोग करते है। कौशल व्यक्ति को घर और समाज दोनों के कार्यों को भली-भाँति करने हेतु सशक्त बनाते है।

जीवन कौशल का दृष्टिकोण न केवल ज्ञान बाँटने पर लक्षित है अपितु इसका लक्ष्य व्यवहार को बदलना तथा अन्तर्व्यक्तिकीय-कौशल (Intra-Individual skill) को विकसित करना है जिसमें युवाओं में बेहतर चुनाव करने, नकारात्मक दबावों का विरोध करने तथा जोखिम पूर्ण व्यवहार से बचने के उत्तरदायित्व की क्षमता को बढाया जा सके। पिछले कुछ समय से तीव्र गति से परिवर्तनशील जगत के कारण विद्यार्थियों के अन्दर अत्यधिक सामाजिक दबाव पड रहा है क्योंकि उन्हें परिवर्तन के साथ कदम से कदम मिलाकर चलना पडता है। उन्हें प्रारम्भ में ही शैक्षिक उपलब्धि हेतु अपनी जीवन शैली में परिवर्तन लाने के दबाव को झेलना पडता है। अतः जीवन कौशल का ज्ञान तथा उनका उपयोग किशोरों को तनाव से निपटने तथा जीवन में मौजूद चुनौतियों से निपटने में प्रभावी हो सकता है।

विश्व स्वास्थ्य संगठन (W.H.O) के अनुसार, जीवन कौशल ''अनुकूलात्मक और सकारात्मक व्यवहार वे योग्यताएँ है जो व्यक्तियों को दैनिक जीवन की मांग और चुनौतियों से प्रभावपूर्ण समायोजन करने योग्य बनाती है।''

यूनीसेफ के अनुसार, ''जीवन कौशल केन्द्रीय योग्यताओं का एक संघ है जिसे कभी-कभी भावात्मक बुद्धि के रूप में वर्णित किया गया है। इसमें मूलभूत कौशल जैसे स्वजागरूकता परानुभूति प्रभावपूर्ण संप्रेषण, अन्तर्वैयक्तिक सम्बन्ध, संवेग से निपटने व प्रतिबल का सामना करने की योग्यता, विवेचनात्मक चिन्तन, सृजनात्मक चिन्तन, निर्णय लेना एवं समस्या समाधान को सम्मिलित किया जाता है।''

1. सामाजिक एवं अन्तः वैयक्तिक कौशल (सम्प्रेषण प्रतिबन्ध कौशल, निश्चित ज्ञात परानुभूति)
2. सज्ञानात्मक कौशल (निर्णय लेने वाला, आलोचनात्मक चिन्तन व स्वमूल्यांकन)
3. संवेगात्मक कौशल (दबाव प्रबन्धन, आन्तरिक नियन्त्रण की शक्ति)

यदि किशोर कुछ जीवन-कौशल अपने में विकसित करते है तब उनमें स्वमूल्यांकन की सकारात्मक भावनायें विकसित होती है और वे अपने चिन्तन और दैनिक क्रिया-कलापों में नये जीवन कौशलों को विकसित करने में सक्षम हो सकते है।

जीवन कौशलों की आवश्यकता एवं महत्व
(Need and Importance of Life Skills)

जीवन कौशलों के विकास की प्रमुख आवश्यकता एवं महत्व को निम्नलिखित रूप में स्पष्ट किया जा सकता है–

1. एक बालक के सर्वांगीण विकास के लिये जीवन कौशलों का ज्ञान देना आवश्यक होता है, क्योंकि जीवन कौशलों के ज्ञान के अभाव में वह पूर्ण विकास की ओर अग्रसर नहीं हो सकता है।
2. सामाजिक गुणों के विकास के लिये भी जीवन कौशलों का ज्ञान आवश्यक समझा जाता है, क्योंकि जीवन कौशल मर्यादित, आदर्श एवं सामाजिक व्यवहार में उपयोगी सिद्ध होते हैं।
3. शैक्षिक समस्या एवं अशैक्षिक समस्याओं के समाधान के लिये भी जीवन कौशलों का विकास होना आवश्यक है।
4. संवेगात्मक स्थिरता एवं मानसिक प्रक्रिया को सरल एवं स्वाभाविक रूप में सम्पन्न करने के भी जीवन कौशलों की आवश्यकता का अनुभव किया जाता है।
5. बालकों में आत्म–विश्वास की भावना के विकास के लिये भी जीवन कौशलों की आवश्यकता होती है।

जीवन कौशल की विशेषताएँ (Characteristics of Life Skill)

जीवन कौशलों की अवधारणा एवं विद्वानों के विचारों के आधार पर जीवन कौशल में निम्नलिखित विशेषतायें पायी जाती है

1. बालकों में व्यावहारिक ज्ञान का समावेश–इसके अन्तर्गत बालकों में उन सभी कुशलताओं के बारे में ज्ञान प्रदान किया जाता है, जिनकी आवश्यकता बालक को अपने भावी जीवन में सामान्य रूप से पडती रहती है। जैसे–शीघ्र निर्णय लेने की कुशलता एवं आत्म– विश्वास संबंधी कुशलता आदि ।
2. जीवन सम्बन्धी दक्षताओं का समावेश–बालकों को इसके अन्तर्गत जीवन में सफल होने एवं प्रत्येक क्षेत्र में सफल होने के साथ समायोजित होने की विशेषता का विकास होता है।
3. बालकों में सकारात्मक एवं आदर्श व्यवहार का विकास– अनेक अवसरों पर छात्र प्रत्येक क्रिया एवं व्यवस्था के बारे में नकारात्मक धारणा बनाकर कुण्ठाग्रस्त हो जाते हैं, परिणामस्वरूप यह परिस्थिति बालको को स्वयं को समायोजित करने में बाधाकता उत्पन्न करती है इस बाधा से निपटने के लिये छात्रों को सकारात्मक सोच एवं व्यवहार की कुशलता प्रदान की जाती है।
4. आत्म विश्वास से सम्बन्ध स्थापित करना–जीवन कौशलों का आत्म तत्व आत्म विश्वास होता है, जिसके अभाव में कोई बालक कार्य की योग्यता होते हुए भी कार्य को उचित रूप से सम्पन्न नहीं कर पाता। अतः जीवन कौशल की शिक्षा द्वारा छात्रों में आत्म विश्वास की भावना विकसित करने का प्रयास किया जाता है जिससे वह प्रत्येक कार्य को सफलता एवं प्रभावी रूप में सम्पन्न कर सके।
5. निष्पक्षता की विशेषतायें–एक शिक्षक को चिन्तन करते समय किसी प्रकार के पूर्वाग्रह को स्थान नहीं देना चाहिये अतः विचार प्रक्रिया एवं चिन्तन प्रक्रिया को पक्षपात एवं पूर्वाग्रह से रहित होना चाहिए ।
6. आधुनिकता की विशेषता का समावेश–आधुनिकता का आशय उन परिस्थितियों एवं व्यवस्थाओं से होता है जो कि वर्तमान समय में हमारे समक्ष होती है अतः शिक्षक को सदैव अपने विचारों के प्रस्तुतीकरण एवं चिन्तन में आधुनिकता का भी समावेश करना चाहिये।

2.व्यावसायिक आचरण एवं नीति

शिक्षण (Teaching)

अपने जीवन में आप शिक्षण प्रक्रिया से किसी न-किसी रूप में अवश्य ही रूबरू हुए होंगे। यह संभव है कि आपने स्वयं एक शिक्षक या शिक्षिका की भाँति शिक्षण का अनुभव न किया हो, लेकिन आपने कभी न कभी अपने छोटे भाई बहन या पडोस के बच्चे को कोई-न-कोई अवधारणा या प्रत्यय जरूर पढाया होगा यह अन्तर्सम्बन्ध किसी कहानी को सुनाने के दौरान भी संभव है। यदि फिर भी आपने ऐसा अनुभव न किया हो तो एक शिक्षार्थी के रूप में आप अवश्य ही शिक्षण की प्रक्रिया का अवलोकन कर पाए होंगे। फिर चाहे वह स्कूल में गणित, हिंदी या विज्ञान के शिक्षक या शिक्षिका से पडकर अनुभव किया हो या घर में माता-पिता से। यह भी हो सकता है कि आपने ट्यूशन लेते समय इस प्रक्रिया को समझा हो। उपरोक्त प्रत्येक स्थिति में शिक्षण प्रक्रिया को देखा जा सकता है, परंतु हमारी चर्चा का केंद्र इस इकाई में औपचारिक शिक्षा क्षेत्र जैसे स्कूल ही होगा। अन्य अनौपचारिक शिक्षण जैसे होम स्कूलिंग आदि।

कोई व्यक्ति शिक्षण व्यवसाय का चुनाव करता है। तो उसमें शिक्षण के प्रति रुचि व लगाव ऐसा कारण है जो अधिकतर लोगों को शिक्षण व्यवसाय चुनने के लिए प्रेरित करता है। कई लोगों को पढाने में बहुत आनंद मिलता है। उन्हें शिक्षण प्रक्रिया के दौरान शिक्षार्थियों से होने वाली चर्चा व अन्तर्सम्बन्ध से लगाव होता है। यही वजह है कि बहुत से लोग वाणिज्य और प्रबंध संबंधी व्यावसायिक कोर्स करने के पश्चात् भी शिक्षण व्यवसाय का चुनाव करते है ताकि वे व्यवसाय के चुनाव से संतुष्ट हो सकें। किसी विषय के प्रति रुचि और लगाव भी शिक्षण को व्यवसाय के रूप में चुनने में मदद कर सकता है। बहुत से लोग जो शिक्षण में रुचि रखते है, उसका कारण उनके द्वारा चुने गए विषय के प्रति लगाव होता है। आपने देखा होगा कि कुछ शिक्षक स्वयं को शिक्षक न कहके अंग्रेजी शिक्षक, हिंदी शिक्षक या गणित शिक्षक कहकर संबोधित करते है। इससे प्रतीत होता है कि वह अपने विषय से बहत गहरे रूप से जुडे हुए है ऐसे व्यक्ति उस विषय के बारे में जानने के लिए सदैव उत्सुक होते है और उस विषय का ज्ञान शिक्षार्थियों के साथ बाँटने से भी उन्हें प्रशंसा मिलती है, इसलिए वे शिक्षण व्यवसाय का चुनाव करते है, ताकि उन्हें यह अवसर सदैव मिलता रहे। आप भी अपने किसी शिक्षक या शिक्षिका को याद कर सकते है जो अपने विषय के प्रति काफी उत्सुक रहते थे शिक्षार्थियों के प्रति लगाव भी शिक्षण व्यवसाय को चुनने का मुख्य कारण बन सकता है। ऐसा बिल्कुल हो सकता है कि आप शिक्षण प्रक्रिया व किसी विषय शिक्षण में रुचि रखने की बजाय शिक्षार्थियों के प्रति लगाव रखें। कई शिक्षक शिक्षण व्यवसाय की स्थिति व तनख्वा से संतुष्ट न होने के बावजूद भी केवल विद्यार्थियों को पढाने के लिए व्यवसाय में बने रहते है ताकि विद्यार्थियों का भविष्य बन सके। इसके अतिरिक्त कई लोग शैक्षिक जीवन जीने के लिए इस व्यवसाय का चुनाव करते है। वे लोग अपना सम्पूर्ण जीवन केवल शिक्षा को पाने और बाँटने में बिताना चाहते है। वे एक शिक्षक के रूप में सदैव नया ज्ञान निर्मित करना चाहते है और अपने पूर्व ज्ञान में इजाफा करना चाहते है और अपनी समझ के आधार पर ज्ञान क्षेत्र में सदैव भागीदार बनना चाहते है। इनमें अधिकतर वे लोग शामिल होते है जिन्होंने अपना स्कूली जीवन बहुत आनंदपूर्वक गुजारा है और सदैव इस तरह के जीवन को जीना चाहते है, इसलिए वे व्यवसाय के रूप में शिक्षण को चुनते है। शिक्षण व्यवसाय को चुनने का कारण इस पेशे में मिलने वाले लाभ भी हो सकते है। शिक्षण व्यवसाय की समयावधि अन्य व्यवसाय से कम होने की वजह से भी लोग इस व्यवसाय का चुनाव करते है। अक्सर यह कहा जाता है कि शिक्षण में सिर्फ आधे दिन कि नौकरी है उसी प्रकार शिक्षण व्यवसाय में मिलने वाली छुटियाँ भी कई लोगों के लिए इस व्यवसाय को चुनने का कारण बनती है वर्णित सभी कारण किसी व्यक्ति को शिक्षण व्यवसाय चुनने में और उसमें बने रहने के लिए अभिप्रेरित करते है।

भारतीय सन्दर्भ में शिक्षण व्यवसाय
(Teaching Profession in Reference of India)

शिक्षण व्यवसाय व शैक्षिक प्रक्रिया के बारे में एक गहन विश्लेषण करने के लिए यह आवश्यक है कि आप इसको भारतीय सन्दर्भ में समझें। शिक्षण व्यवसाय के बारे में भारतीय समाज में क्या रवैया है व किस प्रकार की विचारधारा है। इसको समझने के लिए हमें शैक्षिक प्रक्रिया को पूर्ण रूप में जानना होगा। भारतीय समाज में शिक्षण व्यवसाय के प्रति लोगों की मानसिकता से पता लगता है कि यह व्यवसाय कोई भी व्यक्ति कर सकता है। इस व्यवसाय को करने के लिए किसी खास योग्यता की जरूरत नहीं होती। अक्सर यह माना जाता है कि औसत योग्यता वाला व्यक्ति इस व्यवसाय को सरलता से कर सकता है। इस मानसिकता का कारण संभवतः यह हो सकता है कि लोग अनौपचारिक शिक्षा जैसे ट्यूशन पढाना या घर में बच्चों को पढाने और औपचारिक संस्था जैसे स्कूल में शिक्षण के बीच का अन्तर अनुभव कर पाने में असमर्थ होते हैं। इसके साथ ही लोगों को लगता है कि बहुत कम पढा लिखा व्यक्ति भी शिक्षण व्यवसाय को चुन सकता है. क्योंकि यह व्यवसाय चुनौतीपूर्ण प्रतीत नहीं होता है। शैक्षिक योग्यता दृष्टिकोण से भी आप पाएंगे कि स्कूल में शिक्षक बनने के लिए बारहवीं कक्षा के पश्चात् केवल दो वर्ष शिक्षण क्षेत्र में डिप्लोमा के पश्चात् आप आवेदन भर सकते हैं, जबकि अन्य क्षेत्रों जैसे वकालत डॉक्टरी व प्रबंधन आदि के लिए कोर्स अवधि शिक्षण व्यवसाय कि तुलना में कहीं अधिक है। रोजगार के सम्बन्ध में हमें शिक्षण व्यवसाय के प्रति यह देखने को मिलता है कि इस व्यवसाय के लिए बहुत बडी मात्रा में आवेदन पत्र प्राप्त किए जाते हैं, क्योंकि शिक्षण व्यवसाय में आप किसी भी स्ट्रीम में अथवा विषय में स्नातक करके दो वर्ष का बी.एड. प्रोग्राम करके पद के लिए नियुक्त किए जा सकते हैं।

शिक्षण व्यवसाय के सम्बन्ध में ऐतिहासिक दृष्टिकोण पर एक नजर डालने पर हमें वर्तमान में इसके स्वरूप को समझने में मदद मिलेगी पूर्व ब्रिटिश काल की बात की तो भारत में शिक्षण व्यवसाय को बहुत ऊँचा दर्जा दिया गया था। यह शिक्षण प्रक्रिया मुख्य रूप से आश्रम में गुरु शिष्य के बीच होती थी। लोग अपने बच्चों को ज्ञान प्राप्त करने हेतु गुरु के पास भेजते थे। गुरु का स्थान शिष्यों व अभिभावकों दोनों की नजरों में काफी ऊँचा था। इस ज्ञान के बदले शिष्य गुरु को जीवनयापन हेतु आवश्यक सामग्री गुरु दक्षिणा के रूप में देते थे। गुरु अपने शिक्षण व्यवसाय से काफी संतुष्ट प्रतीत होते थे। गुरु स्वयं ही शिष्यों को पढाये जाने वाले पाठ्यक्रम का चुनाव करते थे और उस ज्ञान को किस तरीके से संचारित करना है इसका निर्णय भी वे स्वयं ही लेते थे। इसके बाद ब्रिटिश काल में शिक्षण व्यवसाय में काफी बदलाव आया। औपनिवेशिक काल में शिक्षण व्यवसाय को सरकार ने अपने अधीन कर लिया। अब शिक्षकों को एक निर्धारित तनख्वा पर नौकरी पर रखा जाने लगा। शिक्षकों को पहले से ही सरकार द्वारा तैयार पाठ्यक्रम दिया जाने लगा जो उन्हें निर्धारित समयावधि में ही पूरा करना होता था। शिक्षकों के पास अब यह अधिकार नहीं रह गया था कि वे अपने शिष्यों को पढायी जाने वाली विषयवस्तु व विधियों का चुनाव कर सकें। सरकार द्वारा मिलने वाली तनख्वा के कारण अब शिक्षकों को विद्यार्थियों की ओर से मिलने वाली सामग्री जिससे वे अपना जीवनयापन करते थे वह पूरी तरह समाप्त हो गई। शिक्षकों को अब शिक्षण के अतिरिक्त विद्यार्थियों के दाखिलों का रिकर्ड, परीक्षा संबंधी रिकर्ड आदि का व्यौरा व्यवस्थित करना होता था जिसके लिए उन्हें अलग से किसी प्रकार की सुविधा नहीं मिलती थी। प्रशासनिक कार्य प्रतिदिन शिक्षण के साथ-साथ बढते रहे। इसके अलावा भी शिक्षकों को कई जिम्मेदारियाँ दी जाने लगी जिनका शिक्षण से कोई सम्बन्ध नहीं था। इसमें बच्चों को पोलियो की दवा पिलाना, जनगणना कार्य व मतदान आदि के लिए ड्यूटी करना शामिल था। वर्णित सभी कारणों की वजह से शिक्षण व्यवसाय को निचले स्तर के व्यवसाय के रूप में देखा जाने लगा। इतिहास में आये इस व्यवसाय के स्वरूप में बदलाव को हम आज भी स्पष्ट रूप से देख सकते हैं। वर्तमान में भी एक शिक्षक या शिक्षिका के ऊपर इतने अधिक कार्य व ड्यूटी डाल दी गई है जिसकी वजह से शिक्षण व्यवसाय ने अपनी महत्ता को भारतीय सन्दर्भ में कहीं खो दिया है यह बात भी उतनी ही सत्य है कि इस समाज में स्कूली शिक्षण व विश्वविद्यालय स्तर पर शिक्षण के दृष्टिकोण में काफी अंतर है। विशिष्ट रूप से प्रारंभिक शिक्षकों या प्राथमिक शिक्षकों को

सबसे निचले स्तर पर रखा जाता है फिर चाहे वह तनख्वा के नजरिये से हो या स्थिति के नजरिए से। आज के समय शिक्षण व्यवसाय को भारतीय समाज में महिलाओं के लिए सर्वश्रेष्ठ माना जाता है। यह मानसिकता भी देखने को मिलती है कि महिलाएँ शिक्षण की आद्ये दिन की नौकरी के साथ-साथ अपना घर भली भाँति संभाल सकती हैं। इसलिए रुचि न होते हुए भी उनपर शिक्षण व्यवसाय चुनने के लिए दबाव डाला जाता है। उपरोक्त चर्चा के बाद आप यह समझ पाने में समर्थ होंगे कि भारतीय समाज में शिक्षण व्यवसाय को एक सरल व्यवसाय के रूप में देखा जाता है। अगले भाग में हम शिक्षण को एक जटिल गतिविधि के रूप में जानेंगे।

शिक्षण एक जटिल गतिविधि के रूप में
(Teaching as a CompleÛ Activity)

जैसा कि हम पहले भी पढ चुके है कि अधिकतर लोग शिक्षण व्यवसाय को सरल समझकर उसके विषय में अपनी धारणा बनाते है, परंतु जब हम शिक्षण की बात एक औपचारिक संस्था जैसे स्कूल या कहलेज में करते है तो हम पाते है कि शिक्षण एक चुनौतीपूर्ण व्यवसाय है औपचारिक संस्थान में इस व्यवसाय को समझने पर हम पाते है कि यह एक जटिल गतिविधि है। हम निम्न वास्तविकताओं को समझने के बाद ही इसकी जटिलताओं को भली-भांति समझ सकेंगे।

(i) विद्यार्थियों की अनुक्रियाओं का अनुमान न लगा पाना– शैक्षिक प्रक्रिया के अंतर्गत शिक्षकों के सम्मुख यह सबसे बडी बात चुनौती के रूप में उभर कर आती है कि वे पहले से यह अनुमान नहीं लगा सकते कि किसी प्रत्यय अथवा अवधारणा को लेकर विद्यार्थियों की अनुक्रिया क्या होगी। शिक्षण के परिणामों का न तो अनुमान लगाया जा सकता है और न ही ये परिणाम संगत होते है। शिक्षण अधिगम प्रक्रिया का पूर्ण रूप से सफल होना कभी भी केवल एक ओर से नहीं होता। इसके बहुत से कारक जैसे विषयवस्तु के प्रति रुचि, शिक्षिका की विषय पर पकड, कक्षा का वातावरण, शिक्षण पद्धति के लिए चुनी गई विधि, शिक्षण-अधिगम सामग्री की प्रासंगिकता अन्तर्सम्बन्ध के लिए उपयुक्त व पर्याप्त समय इत्यादि ऐसे कारक है जो एक साथ मिलकर किसी शिक्षण को सफल बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते है। इन सभी तत्वों के सुचारु रूप से काम करने पर भी विद्यार्थियों की अनुक्रियाओं का शत प्रतिशत अनुमान लगाना असभव साबित होता है। एक शिक्षक या शिक्षिका चाहे कितनी भी बेहतर पाठ योजना का निर्माण करे, परन्तु शिक्षण के दौरान बच्चों का कक्षा में शांत रहना या बीच में बोरियत को अनुभव करना या विषय के बारे में उलझन महसूस करना आदि के आधार पर यह नहीं कहा जा सकता कि बच्चों ने प्रत्यय को कितना समझा है।

(ii) बच्चे पाठ्यक्रम का अनुभव कैसे कर रहे है यह पता लगाना कठिन कार्य है – बच्चों ने शिक्षण से कितना सीखा या समझा है इसका पता लगाना वाकई शिक्षकों के लिए एक मुश्किल कार्य है। शिक्षण का श्रेष्ठतम् उद्देश्य यह है कि बच्चों की संसार के तत्वों के बारे में एक गहरी समझ बने, परंतु विद्यार्थियों ने समझा है या नहीं और जिस प्रकार से समझाने का उद्देश्य था उसी प्रकार से समझा या नहीं, इसकी पुष्टि कर पाना बेहद मुश्किल साबित होता है। पाठ्यक्रम के साथ-साथ बडे स्तर पर यह बात पाठ्यचर्या के लिए भी उतनी ही सही साबित होती है। पाठ्यचर्या से अभिप्राय एक विद्यार्थी द्वारा स्कूल की चाहरदीवारी में प्राप्त होने वाला प्रत्येक अनुभव उदाहरण के रूप में यदि कोई शिक्षक बच्चों को विभिन्न प्रकार के पेडों के बारे में बताने के लिए उन्हें स्कूल का एक चक्कर लगाने को कहता है और अलग-अलग तरह के पेडों का अवलोकन करने को कहता है। चक्कर लगाने केबाद कक्षा में हुयी चर्चा के दौरान कई विद्यार्थी अपने अवलोकन को बताते है जो उन्होंने पेडों के बारे में किया था, परंतु कुछ बच्चे चर्चा में भाग नहीं लेते, जबकि उन्होंने भी अवलोकन के दौरान जानकारी एकत्र की है। हालांकि वह जानकारी पेडों पर आधारित न होकर उसी मैदान में मिले पत्थरों के बारे में थी। पाठ योजना के उद्देश्य के अनुसार चर्चा केवल पेडों पर आधारित थी। इसलिए उन बच्चों के

पत्थरों से सम्बन्धित अवलोकनों को कक्षा में स्थान नहीं मिल सका। ऐसी परिस्थिति में जब बच्चे किसी भी प्रकार के अधिगम के लिए बिल्कुल आजाद होते हैं तो शिक्षिका के लिए यह बहुत मुश्किल हो जाता है कि बच्चे पाठ्यक्रम को कैसे समझ रहे हैं।

(iii) <u>विद्यार्थी साझेदारी की आवश्यकता</u> शिक्षक एक शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया का सफल होना इस बात पर भी निर्भर करता है कि शिक्षक और विद्यार्थियों के बीच आपसी तालमेल किस प्रकार का है। शिक्षण प्रक्रिया की जटिलता इस बात से स्पष्ट हो जाती है कि यह प्रक्रिया न तो केवल शिक्षक पर आधारित है और न ही शिक्षार्थी पर। दोनों जब एक सामान्य वातावरण में अंत क्रिया करते हैं तो ही ये प्रक्रिया संभव होती है। यह समझना आवश्यक है कि शिक्षिका विद्यार्थियों के व्यवहार में पूर्णतः बदलाव नहीं कर सकती, क्योंकि विद्यार्थी एक कोरी स्लेट की भाँति नहीं है। सामान्यतः बच्चों द्वारा की जाने वाली अनुक्रिया का अनुमान लगाना भी संभव नहीं है। बच्चे को हम फैक्ट्री में तैयार किए जाने वाले किसी उत्पाद के रूप में नहीं देख सकते जो जैसा इनपुट दिया जाये उसके अनुसार ही आउटपुट दे। हालांकि शिक्षा क्षेत्र में कई शिक्षाशास्त्रियों ने बच्चों को निष्क्रिय बताया है, परंतु वर्तमान दृष्टिकोण के अनुसार हम जानते हैं कि एक विद्यार्थी की अपनी इच्छाएँ व योग्यताएँ हैं जिनके अनुसार वह कार्य करता है और शिक्षिका को इन्हीं योग्यताओं व रुचियों को समझकर अपने शिक्षण के साथ उसमें सामंजस्य बैठाना होता है। यह तभी संभव है जब शिक्षक व विद्यार्थी दोनों एक साथ मिलकर ज्ञान की प्राप्ति की ओर बढ़े। शायद इसीलिए शिक्षण प्रक्रिया के समय शिक्षक के सामने विद्यार्थियों के साथ घनिष्ठता का निर्माण (तंचचवतज वितउंजपवद) करना एक आवश्यक शर्त होती है जो उसके बच्चों के साथ अत क्रिया में मदद करती है और वह अपने विचारों को बच्चों तक भली भाँति पहुंचा पाता है।

(iv) <u>प्रत्येक विद्यार्थी का एक–दूसरे से अलग होना–</u> आप पिछले खण्डों में अधिगम के विषय में पढ़ते हुए यह अवश्य जान गए होंगे कि कोई भी दो विद्यार्थी अथवा व्यक्ति एक समान नहीं हो सकते। विभिन्न मनोवैज्ञानिक व शिक्षाशास्त्री व्यक्तिगत अंतरों के बारे में बहुत विश्वासपूर्ण व शोध के आधार पर बात करते हैं राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा, 2005 के अनुसार भी शिक्षण प्रक्रिया के दौरान बच्चों में व्यक्तिगत अंतर का ध्यान रखने पर खास जोर दिया गया है। यदि किसी एक बच्चे की रुचि पढाई में है, तो दूसरे बच्चे की खेल में हो सकती है, और तीसरे बच्चे की संगीत में हो सकती है। इसी तरह यह बिल्कुल संभव है कि एक बच्ची किसी अवधारणा को जल्दी समझ लेती है, जबकि उसी अवधारणा को कोई दूसरा बच्चा समझने में तुलनात्मक रूप से अधिक समय लेता है प्रत्येक बच्चे की रुचि, योग्यताएँ, क्षमताओं व समझने के तरीके में अंतर होता है और उसी वजह से प्रत्येक बच्चा एक–दूसरे से अलग और अपने आप में खास होता है। शिक्षकों के लिए इस स्थिति में शिक्षण प्रक्रिया काफी बडी चुनौती पेश करती है, क्योंकि प्रत्येक विद्यार्थी की आवश्यकताओं व विशिष्टताओं को ध्यान में रखते हुए पाठ योजना बनाना, शिक्षण प्रक्रिया के दौरान होने वाला अन्तर्सम्बन्ध व मूल्यांकन की प्रक्रिया सभी में काफी कठिनाई का सामना करना पडता है।

(v) <u>भारतीय कक्षाओं का आकार–</u> यह बिंदु मुख्य रूप से भारतीय कक्षाओं के सम्बन्ध में जो भारतीय शिक्षकों के लिए एक बहुत बडी चुनौती खडा करता है। अन्य देशों में जहाँ शिक्षण की गुणवत्ता बनाये रखने के लिए विद्यार्थी शिक्षक अनुपात का खास ख्याल रखा जाता है और उसे कम से कम रखने का भी प्रयास किया जाता है। वहीं भारतीय कक्षाओं में आप जानते हैं कि एक–एक कक्षा खचाखच बच्चों से भरी होती है। एक कक्षा में औसत पचास बच्चे होते हैं जो एक शिक्षक अथवा शिक्षिका की जिम्मेदारी होती है। वही शिक्षिका उस कक्षा के सभी बच्चों के शिक्षण, पाठ्यक्रम सम्पूर्ण करने, बच्चों की जानकारी जमा करने संबंधी रिकार्ड्स कार्य व स्कालरशिप संबंधी कार्यों के लिए जिम्मेदार होती है। कई बार तो शिक्षकों की कमी के चलते दो सेक्शन एक साथ मिला दिए जाते हैं जिनकी जिम्मेदारी किसी एक शिक्षक या शिक्षिका को ही उठानी होती है।

(vi) <u>शिक्षण व्यवसाय का वर्णन करने में होने वाली कठिनाई–</u> प्रगतिशील ज्ञान के इस दौर में जहाँ हर पल ज्ञान के क्षेत्र में इजाफा हो रहा है। लोग नयी–नयी वस्तुओं की खोज कर रहे हैं, तकनीक

का विकास हो रहा है। ऐसे भी एक शिक्षक का ज्ञान कभी भी सम्पूर्ण नहीं माना जा सकता। दूसरे शब्दों में हम यह कह सकते है कि एक शिक्षक सदैव सीखता रहता है। इसलिए वह कभी विद्यार्थी या अधिगमकर्ता की भूमिका से अलग नहीं होता। शिक्षण प्रक्रिया को हम शिक्षक व विद्यार्थी के बीच कहीं स्थित कर सकते है। हालांकि यह वास्तव में क्या है इसको बता पाना काफी मुश्किल प्रतीत होता है जिसका अनुभव एक शिक्षक भली-भांति करता है। यह मध्य का रास्ता ऐसा है जिसका अनुभव तो एक व्यक्ति कर सकता है, परंतु उसके लिए उस अनुभव को शब्दों में बता पाना काफी मुश्किल होता है। शिक्षक बनने की इस यात्रा के दौरान आप भी स्वयं में कई क्षमताओं का विकास करेंगे जैसे आपने विद्यार्थियों को सब के साथ सुन पाना और किसी मुद्दे से सम्बन्धित ज्ञान को उनमें विकसित करना आदि, परंतु इन सभी के बावजूद यह संभव है कि आप शिक्षण को स्पष्ट भाषा अथवा शब्दों में न बता सके या उसके लिए कोई निश्चित सूत्र बता सकें। इन सभी कारणों से आप समझ गए होंगे कि शिक्षण एक जटिल गतिविधि के रूप में कैसे काम करता है ? अगले भाग में आप शिक्षक द्वारा निभाई जाने वाली भूमिकाओं को जानेंगे ।

(vii) शिक्षक द्वारा निमाई जाने वाली विभिन्न भूमिकाएँ इससे पिछले भाग में आपने शिक्षण को एक जटिल गतिविधि के रूप में पढा और यह जाना कि यह व्यवसाय कितना चुनौतीपूर्ण है। आपने शैक्षिक प्रक्रिया के दौरान शिक्षक के सम्मुख आने वाली समस्याओं को जाना जो इस व्यवसाय में होना लाजमी है। इस भाग के अंतर्गत हम शिक्षण प्रक्रिया का ही गहन अध्ययन करेंगे और इसके लिए हम एक शिक्षक द्वारा निभाई जाने वाली विभिन्न भूमिकाओं को समझेंगे। जैसा कि हम इस इकाई की शुरुआत में पढ चुके है कि कई लोगों की शिक्षण व्यवसाय के बारे में जो धारणाएँ है उनके अनुसार इस व्यवसाय को बेहद सरल माना गया है। शिक्षक द्वारा किए जाने वाले कार्यों का ब्यौरा हमने कुछ हद तक दिया है, परंतु एक शिक्षक शिक्षण के दौरान व उसके अलावा कई भूमिकाएं निभाता है जिन्हें हम विस्तार से निम्न भाग में जान सकते है-

- <u>लाइव प्रदर्शक</u> – हालाँकि शिक्षण प्रक्रिया के अंतर्गत शिक्षण और अधिगम साथ-साथ होता है, परंतु यह प्रक्रिया शिक्षक के लिए चुनौतीपूर्ण है, क्योंकि उसे सभी विद्यार्थियों के सामने अवधारणाओं को समझाना होता है। शिक्षक इस दौरान एक प्रकार का प्रदर्शक होता है जो लाइव रूप से यह प्रदर्शन करता है। तैयारी के नाम पर शिक्षक पाठ योजना का एक खाका अवश्य बनाता है, लेकिन विद्यार्थियों की अनुक्रिया का अनुमान न लगा पाने की वजह से उसे शिक्षण की प्रक्रिया के दौरान भी अपने प्रदर्शन को लगातार सुधारने की कोशिश करनी होती है। इस भूमिका के अंतर्गत शिक्षक से अवधारणा से सम्बन्धित व अलग कोई भी प्रश्न पूछा जा सकता है जिसके लिए उससे सदैव तैयार रहने की उम्मीद की जाती है। इसके साथ ही एक शिक्षक को लाइव प्रदर्शन में आने वाली आकस्मिक समस्याओं का भी ध्यान रखना होता है और उनका सामना करने के किए तुरंत ही उपाय भी सोचने होते है। उदाहरण के लिए एक शिक्षिका बच्चों को सामाजिक विज्ञान की कोई विषयवस्तु समझाती है. धीरे-धीरे शिक्षिका को यह एहसास होता है की बच्चों की रुचि सम्बन्धित विषयवस्तु में खत्म हो रही है या यूँ कहें कि बच्चे बोरियत महसूस कर रहे है तो इस स्थिति से निकलने के लिए शिक्षिका को कक्षा में कोई रुचिकर मुद्दा या हँसी मजाक का प्रयोग करना पडता है ताकि बच्चे बोरियत से निकलकर अवधारणा को पढने के लिए तैयार हो सकें। इस तरह की परिस्थितियों की तैयारी पहले से कर पाना मुश्किल है। शिक्षकों को उसी समय किसी-न-किसी उपाय को सोचना होता है। यदि वे ऐसा नहीं करते तो इससे शिक्षक विद्यार्थी साझेदारी काफी प्रभावित होती है।
- <u>समूह नेता-</u> शिक्षक को स्कूल में एक समूह नेता की भूमिका भी निभानी होती है। उसे अपनी कक्षा को प्रत्येक कार्य व स्थिति के लिए तैयार करना होता है। वह कक्षा में एक मार्गदर्शक की भाँति कार्य करता है जिसमें बच्चे स्वयं ही सभी कार्य करते है, परंतु उन कार्यों को किस तरह किया जाना है इसका समय-समय पर मार्गदर्शन शिक्षक को ही करना होता है। उदाहरणार्थ यदि किसी सांस्कृतिक कार्यक्रम के लिए कोई नाटक तैयार करना हो तो उसकी जिम्मेदारी एक शिक्षक

पर ही आती है जिसमें उसे बच्चों के समूह को तैयार करना होता है। उसके लिए शिक्षक को प्रत्येक बच्चे की क्षमताओं व विचारों का आदर करते हुए उनकी ऊर्जा को एक सही दिशा में प्रयोग करना होता है। इस तरह के कार्यों के लिए एक टीम की भाँति काम करने की आवश्यकता पडती है और उस टीम का नेतृत्व एक शिक्षक को ही करना होता है।

- कक्षा शिक्षक– ऐसा नहीं है कि स्कूल के अंतर्गत शिक्षकों को केवल बच्चों को पढाना होता है। शिक्षकों को एक कक्षा की जिम्मेदारी भी पूर्ण रूप से लेनी होती है जिसमें वे एक निश्चित कक्षा के शिक्षक बनाये जाते हैं। उस कक्षा को पढाने के साथ–साथ उन्हें उस कक्षा के सभी बच्चों का रिकर्ड रखना होता है। इसमें प्रत्येक बच्चे की मूलभूत जानकारी, उसके परिवार की जानकारी, सामाजिक–आर्थिक स्थिति की जानकारी और उनको समय–समय पर दिए जाने वाली स्कालरशिप की जानकारी रखनी होती है। प्रत्येक बच्चे के बैंक खाते खुलवाने व उन्हें पैसा बांटने की जिम्मेदारी भी कक्षा–शिक्षक की होती है शिक्षण के सम्बन्ध में बात करें तो शिक्षक को पहले शिक्षण नियोजन पर कार्य करना होता है जिसमें उसे प्रत्येक बच्चे की आवश्यकताओं व क्षमताओं के अनुसार पाठ योजना का निर्माण करना होता है और फिर प्रत्येक बच्चे के साथ अंत क्रिया करते समय भी उनके बारे में प्राप्त जानकारी को ध्यान में रखना होता है। इस स्थिति में स्कूल के भीतर एक शिक्षक की पहचान उस कक्षा के प्रदर्शन द्वारा भी की जाती है।
- काउंसलर – यह हम सभी जानते है कि शैक्षिक प्रक्रिया में हमारा उत्पाद विद्यार्थी होते है जिनकी अपनी आवश्यकताएँ, रुचि व क्षमताएँ होती है। प्रत्येक विद्यार्थी एक–दूसरे से अलग होता है, क्योंकि उनकी सामाजिक–आर्थिक पृष्ठभूमि में अंतर होता है। यहाँ तक कि मानसिक रूप से भी उनमें विभिन्नताएं होती हैं। ऐसे में एक शिक्षक या शिक्षिका को बच्चों द्वारा अनुभव की जा रही समस्याओं से भी निकलना होता है। एक शिक्षिका को बच्चों से कई मर्तबा उनके करियर व निजी जिन्दगी संबंधी समस्याओं को सुनकर उन्हें उससे निकलने के लिए उपाय सुझाना होता है। ऐसी स्थिति के अंतर्गत एक शिक्षक की भूमिका एक परामर्शदाता की बन जाती है।
- प्रशासक– शिक्षक को स्कूल के अंतर्गत एक प्रशासक की भूमिका भी निभानी होती है जिसमें उन्हें विभिन्न प्रशासनिक कार्य जैसे स्कूल में दाखिला इंचार्ज, मिड डे मील इंचार्ज, स्कालरशिप इंचार्ज या परीक्षा इंचार्ज बनाया जाता है। उन्हें इन कार्यों के अंतर्गत सभी प्रकार की कागजी व तालमेल संबंधी जिम्मेदारी दी जाती है। उदाहरणार्थ यदि एक शिक्षक परीक्षा इंचार्ज है तो उसे पूरे स्कूल की परीक्षाओं को भली–भाँति करवाने का कार्य करना होता है। उसे सभी कक्षाओं व बच्चों के प्रत्येक विषय का ब्यौरा जमा करना होता है और इससे सम्बन्धित नियोजन करके उसे सुचारु रूप से करवाना भी होता है।
- मूल्यांकनकर्ता – यह आप जानते है कि एक शिक्षक के सम्मुख सभी बच्चों का मूल्यांकन करने की जिम्मेदारी होती है। इसके अंतर्गत उसे बच्चों का पूरे शिक्षण के दौरान व अंत में बहुत ध्यानपूर्वक विश्लेषण करके, उनके प्रदर्शन का अवलोकन करके उनका मूल्यांकन करना होता है। सतत् व व्यापक मूल्यांकन के पश्चात् यह भूमिका और भी महत्वपूर्ण हो गई है।

शिक्षण एक व्यवसाय
(Teaching a Profession)

समाज में कोई भी व्यवसाय हो, उसकी सफलता सदा परिश्रम, लगन एवं निरन्तर प्रयास करते रहने पर निर्भर रहती है। शिक्षक को भी उच्चस्तरीय शिक्षण एवं छात्रोन्नति हेतु सदा तत्पर एवं प्रयासरत रहने की आवश्यकता है।

व्यवसायवृत्तिका का अर्थ (Meaning of Occupation)

वृत्तिका शब्द वृत्ति से बना है जिसका अर्थ है व्यवसाय। अंग्रेजी शब्दकोश में व्यवसाय का अर्थ है किसी कार्यकौशल विशेष पर आधारित व्यवसाय का होना। इसे अपनाकर व्यक्ति अपना जीविकोपार्जन करता है। वह अपने अर्जित ज्ञान व प्रशिक्षण द्वारा अनेक ग्राहकों को सेवा प्रदान करता है जिसके एवज में वह निश्चित शुल्क लेता है। हालांकि कुछ व्यवसाय निशुल्क भी अपनी सेवा प्रदान करते है। आजकल डक्टरी व इंजीनियरिंग की भाँति शिक्षण को भी एक वृति तथा शिक्षक को एक वर्तिक माना गया है। इस प्रकार व्यवसाय के भी कुछ मानक और विशेषताएँ होती है जिसकी हम चर्चा करेंगे।

व्यवसाय के मानक एवं विशेषताएँ

व्यवसायों के संस्थानों द्वारा कुछ निम्नलिखित मानक निर्धारित किये गए है जो इस प्रकार है–

(i) निर्धारित योग्यता धारण करने के पश्चात् ही सम्बन्धित व्यवसाय हेतु लाइसेंस देना।
(ii) अनैतिक आचरण न करना।
(iii) किसी ग्राहक का शोषण न करना।
(iv) समाज कल्याण के कार्यों को बढावा देना।
(v) आवश्यकता पडने पर सेवा उपलब्ध करना।
(vi) सेवा कार्यों के बदले उचित शुल्क लेने का अधिकार।
(vii) सामाजिक कार्यों में प्रतिवद्धता।

व्यवसाय की विशेषताएँ इस प्रकार है–

(i) व्यवसाय अपने सदस्यों के निरंतर सेवाकालीन प्रशिक्षण की मांग करता है
(ii) व्यवसाय समाज सेवा प्रदान करता है।
(iii) हर व्यवसाय की अपनी आचार संहिता होती है।
(iv) व्यवसाय अपना खुद का संगठन गठित करता है।
(v) व्यवसाय का अपना विशिष्ट ज्ञान का भण्डार होता है।
(vi) व्यवसाय अपने सदस्यों के व्यावसाहिक जीविका का आश्वासन देता है।

शिक्षण वृत्तिक की विशेषताएँ

एक अच्छे शिक्षण व्यवसाय की अपनी विशेषताएँ होती है जो निम्नलिखित है–

1. इसकी अपनी आचार संहिता होती है।
2. यह सेवाकालीन विकास उत्पन्न करता है।
3. यह ज्ञान के व्यवस्थित भंडार पर आधारित है।

4. यह एक सामाजिक सेवा है
5. इसमें बौद्धिक क्रियाएँ सम्मिलित हैं।
6. यह उच्च मूल्यों को स्वायत्तता प्रदान करता
7. यह आत्म संगठन की ओर ले जाता है।
8. इसमें अध्ययन और प्रशिक्षण शामिल है।

शिक्षण व्यवसाय का विश्लेषण
(Analysis of Teaching)

चूँकि शिक्षण एक जटिल प्रक्रिया है। इसके अध्ययन हेतु इसके अंगों का ज्ञान आवश्यक है। शिक्षण के यह अंग निम्नलिखित है–

(1)शिक्षक एक व्यवस्थापक या प्रबंधक के रूप में

आई. के. डेवीज के अनुसार शिक्षक एक व्यवस्थापक या प्रबंधक है। इसे सत्यापित करने के लिए उन्होंने शिक्षक के कार्यों की व्याख्या की। उन्होंने कहा कि शिक्षक अधिगम शिक्षण वातावरण का निर्माण कर शिक्षण का नियोजन करता है। शिक्षण अधिगम साधनों की व्यवस्था करता है और उनको क्रियान्वित करता है। वह अपने छात्रों को सीखने के लिए प्रेरित करता है। वह उन सभी क्रियाओं का नियंत्रण करता है जिससे शिक्षण के उद्देश्यों की प्राप्ति हो सके और यदि उद्देश्यों की प्राप्ति में असफलता हो तो वह कोशिश करता है कि किस तरह उनमें सुधार लाया जाये। इस प्रकार शिक्षक कई भूमिका निभाता है। वह एक नियोजनकर्ता के रूप में, संगठनकर्ता के रूप में, एक प्रशासक के रूप में, एक निर्देशक के रूप में, एक परामर्शदाता के रूप में एक नियंत्रणकर्ता के रूप में और एक नेता के रूप में कार्य करता है। इस प्रकार प्रबंधक के रूप में शिक्षक के कार्यों को चार सोपानों में विभाजित किया जाता है

- नियोजन सम्बन्धी कार्य
- संगठन या व्यवस्था सम्बन्धी कार्य
- मार्गदर्शन या अग्रसर सम्बन्धी कार्य तथा
- नियन्त्रण सम्बन्धी कार्य

I. नियोजन सम्बन्धी कार्य (**Planning**)– शिक्षण–अधिगम व्यवस्था का यह पहला और महत्वपूर्ण सोपान है। आई. के. डेवीज के शब्दों में–नियोजन के अंतर्गत वे सभी क्रियाएँ सम्मिलित होती है जिन्हें शिक्षक सीखने के उद्देश्यों की स्थापना के लिए सम्पन्न करता है।

"In teaching, planning is the work a teacher does to establish learning objectives." - LK- Davis

नियोजन सम्बन्धित क्रियाओं के अंतर्गत शिक्षक की क्रियाएँ निम्न प्रकार है–

(a)प्रणाली विश्लेषण (System Analysis),

(i) कार्य विश्लेषण (Task Analysis),

(ii) पूर्व योग्यताओं का बोध करना (Entering Behaviour),

(iii) ज्ञान, कौशल तथा अभिवृत्ति का विशिष्टीकरण करना (Specification of knowledge, skill and attitude)
(iv) आवश्यकताओं को पहचानना (Identifying needs),
(v) उद्देश्यों की व्याख्या करना (Formulating objectives) तथा
(vi) मूल्यांकन के लिए मानदंड परीक्षा का नियोजन करना (Criterion test)

II. संगठन या व्यवस्था सम्बन्धी कार्य (**Organization**)– इसके अन्तर्गत शिक्षक अधिगम स्रोतों की व्यवस्था करता है तथा शिक्षण को क्रियान्वित करता है जिनके माध्यम से वह अधिगम के सोतों को व्यवस्थित तथा संगठित करता है। इस प्रकार वह शिक्षण के उद्देश्यों की प्राप्ति प्रभावपूर्ण ढंग से करता है। आई. के डेवीज ने इसका वर्णन इस प्रकार किया, ''व्यवस्था शिक्षक का वह कार्य है जिसमें वह सीखने के साधनों को व्यवस्थित व सम्बन्धित करता है जिससे सीखने के उद्देश्यों का बहुत प्रभावशाली, कुशलतापूर्वक तथा मितव्ययी ढंग से प्राप्त होना संभव हो
"Organisation is the work a teacher does to arrange and release learning resources so as to realise learning objectives in the mOst effective] efficient and economical way possible-" I. K. Davis

III. मार्गदर्शन या अग्रसरण सम्बन्धी कार्य तथा **Leading**– इसमें शिक्षक का कार्य शिक्षण अधिगम की प्रक्रिया में छात्रों को अग्रसर करना, मार्गदर्शन देना व प्रोत्साहित करना है। इसकी प्राप्ति के लिए वे विधियों तथा प्रविधियों का चयन करते है आई. के. डेवीज के अनुसार, अग्रसरण या मार्गदर्शन शिक्षक का वह कार्य है जिसमें वह अपने विद्यार्थियों को प्रेरित, प्रोत्साहित तथा उत्तेजित करता है, जिससे सीखने के उद्देश्यों को सरलतापूर्वक प्राप्त किया जा सके।
"Leading is the work a teacher does to motivate] encourage and inspire his students so that they will readily achieve learning objectives."- I.K. Davis

IV. नियन्त्रण सम्बन्धी कार्य (**Controlling**)– यह शिक्षण–अधिगम व्यवस्था का अंतिम व महत्वपूर्ण सोपान है। इसमें शिक्षक यह देखता है की उद्देश्यों की प्राप्ति हुई की नहीं। इसके लिए वह शिक्षण प्रणाली का मूल्यांकन करता है, अधिगम प्रणाली का निरीक्षण करता है तथा शिक्षण–अधिगम प्रणाली में सुधार लाता है। आई. के. डेविस ने इस सन्दर्भ में कहा –शिक्षण में नियंत्रण शिक्षक का वह कार्य है जिसमें वह यह निर्धारित करता है कि उसकी योजनायें प्रभावपूर्ण ढंग से लागू की जा रही है, व्यवस्था शक्तिशाली है तथा अग्रसरण सही दिशा में है और यह सब कार्य पूर्व निर्धारित उद्देश्यों को प्राप्त करने में कहाँ तक सफल है
"In teaching] controlling is the work a teacher does to determine whether his plans are being carried out effectively] organization is sound] realizing it in right direction and that how far these functions are successful in realizing the set objectives."- 1. K. Davis
उपरोक्त व्याख्या द्वारा यह ज्ञात हुआ कि शिक्षण–अधिगम व्यवस्था के चार सोपान होते है जो भिन्न–भिन्न होने पर भी एक–दूसरे से सम्बन्धित है। इन सोपानों का चक्रीय सम्बन्ध चित्र द्वारा प्रदर्शित किया गया है